न्यूज़ बुलेटिन :

सन्मार्ग

कालीचरण पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ की प्रस्तुति

वर्ष–2 अंक–10
मासिक –सितम्बर, 2023

सत्र का उद्देश्य

- पढ़ने और सीखने की प्रवृत्ति को रूचिकर बनाना
- शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाना
- देश और मानवता के हित में अपने को योजित करना
- नैतिक और धार्मिक मूल्यों का अवगाहन

प्रबन्धक
इं0 वी0 के0 मिश्र
प्राचार्य
प्रो0 चन्द्र मोहन उपाध्याय

सम्पादकीय

सम्पादक
राजीव यादव
उप–सम्पादक
नितिन कुमार सिंह
सहयोग
पुष्पेन्द्र कुमार

कालीचरण पी०जी० कॉलेज

हरदोई रोड, चौक, लखनऊ–226003
(लखनऊ विश्वविद्यालय)

Events at College

दिनांक 01.09.2023 को शिक्षा–शास्त्र विभाग द्वारा सत्र 2023–24 के प्रारम्भ में बी0ए0 एवं एम0ए0 शिक्षा–शास्त्र के पाठ्यक्रमानुसार वर्तमान सत्र की शैक्षिक गतिविधियों को पूर्ण कराने पर चर्चा की गयी।

दिनांक 05.09.2023 को शिक्षक दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस को मनाया गया। शिक्षकों के सम्मान का कार्यक्रम केनरा बैंक की शाखा प्रबंधक (चौक शाखा) श्रीमती फखरेबा खान की ओर से किया गया। इस कार्यक्रम में शिक्षकों का सम्मान करने के लिए केनरा बैंक के असिस्टेंट जनरल मैनेजर श्री अमित कुमार अस्थाना एवं तकनीकी मैनेजर श्री मनीष श्रीवास्तव जी भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रबंधक इंजीनियर वी0के0 मिश्र जी ने किया। बैंक के द्वारा इस खास आयोजन को महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापकों, प्रोफेसर मीना कुमारी एवं चीफ प्रॉक्टर डीसीडीआर पाण्डेय आदि प्राध्यापकों ने जमकर सराहना की। केनरा बैंक ने महाविद्यालय के सभी 60 प्राध्यापकों का सम्मान किया और अपनी आस्था महाविद्यालय के विकास में व्यक्त की कि हम लोग हमेशा सहयोग करेंगे इस अवसर पर महाविद्यालय के सैकड़ों विद्यार्थी उपस्थित थे। उन्होंने बहुत ही उत्साह के साथ कार्यक्रम में हिस्सा लिया इसी क्रम में महाविद्यालय के लाल जी टण्डन विज्ञान भवन में आयोजित विज्ञान के विद्यार्थियों के द्वारा शिक्षक सम्मान समारोह में महाविद्यालय के प्रबंधक इंजीनियर वी0के0 मिश्र, प्राचार्य प्रो0 चन्द्र मोहन उपाध्याय एवं विज्ञान विभाग से डॉ0 प्रवीर सिंह, सुश्री शिवांगी त्रिपाठी, डॉ0 इरा रस्तोगी एवं डॉ0 वंदना यादव उपस्थित रहे।

दिनांक 5 सितम्बर, 2023 को शिक्षक दिवस के अवसर पर समाज कल्याण विभाग, उत्तर–प्रदेश, लखनऊ द्वारा मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के अंतर्गत शिक्षण कार्य कर रही श्रीमती हर्षा सान्वाल को उत्कृष्ट शिक्षण कार्य हेतु सम्मानित किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों ने उन्हें बधाई दिया।

दिनांक **14.09.2023** को **कालीचरण पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ** के **बाबू श्यामसुन्दर दास सभागार** में **'हिन्दी–दिवस'** के अवसर पर **'विश्व भाषा के रूप' में हिन्दी के बढ़ते कदम'** विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित **प्रवासी साहित्यकार पूर्णिमा वर्मन जी** ने कहा कि आज हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। लेकिन जो एंजेंसियाँ सर्वे करती हैं, वो कहीं न कहीं भारत के साथ दुर्भावनापूर्ण व्यवहार के चलते सही डाटा उपलब्ध नहीं कराती।

महाविद्यालय के प्रबंधक **इं0 वी0के0 मिश्र जी** ने कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान में हिन्दी की स्थिति सुखद है। देश के सभी प्रमुख संस्थानों में हिन्दी का प्रयोग हो रहा है और विश्व के सभी प्रमुख देशों में हिन्दी भाषियों का दायरा बढ़ रहा है।

महाविद्यालय के प्राचार्य **प्रो0 चन्द्र मोहन उपाध्याय जी** ने विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि यह यात्रा तब तक अधूरी हैं, जब तक हम हिन्दी को ज्ञान–विज्ञान की भाषा नहीं बनाते हैं। वर्तमान युग तकनीकि का युग है और हमें हिन्दी को विश्व भाषा बनाने के लिए हिन्दी को तकनीकि भाषा के रूप में विकसित करना होगा।

हिन्दी विभाग के प्रभारी एवं कार्यक्रम संयोजक प्रो0 मनोज कुमार पाण्डेय ने विषय–विस्तार करते हुए हिन्दी की विकास यात्रा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जो यात्रा हिन्दी ने छठी–सातवीं शताब्दी में प्रारम्भ की थी वह एक आन्दोलन बन गयी है और विश्व के सभी बड़े देशों में बोली और समझी जा रही है। अपने काव्यपाठ 'भारत का तिरंगा हूँ, मैं शान से जिन्दा हूँ' में हिन्दी के इसी स्वरूप को इन्होंने बताया। कार्यक्रम में विभागीय शिक्षक डॉ0 शोभा श्रीवास्तव और श्री नितिन सिंह ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ0 अवधेन्द्र प्रताप सिंह ने और धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 अरूण कुमार यादव ने किया। इस अवसर पर महाविद्यलय के समस्त प्राध्यापकगण और विद्यार्थी अधिक संख्या में उपस्थित रहे।

19 सितम्बर, 2023 को श्यामसुन्दर सभागार में महाविद्यालय के B.A., B.Sc., B.J.M.C., B.L.I.Sc प्रथम सेमेस्टर के सभी विद्यार्थियों के लिए ओरिएन्टेशन प्रोग्राम का आयोजन किया गया, जिसमें पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में आवश्यक सूचनाएं दी गयी। जिसमें महाविद्यालय के प्राचार्य और समस्त प्राध्यापकगण उपस्थित रहे।

21 सितम्बर, 2023 को हिन्दी विभाग द्वारा M.A. चतुर्थ सेमेस्टर के छात्रों की मौखिकी का आयोजन किया गया। जिसमें हिन्दी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो0 कृष्णा श्रीवास्तव जी वाह्य परीक्षक के रूप में आये थे।

29 सितम्बर, 2023 को कालीचरण पी0जी0 कालेज और इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में स्वच्छता सप्ताह के अंतर्गत रूमी गेट के पास स्वच्छता अभियान चलाया गया जिसमें छात्रों और महाविद्यालय के शिक्षकों ने मिलकर साफ–सफाई की और लोगों को

स्वच्छता के लिए जागरूक किया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 चन्द्र मोहन उपाध्याय और इग्नू के क्षेत्रीय समन्वयक कीर्ति विक्रम सिंह N.S.S. इकाई के कार्यक्रम अधिकारी, डॉ0 अल्का द्विवेदी, डॉ0 मुकेश मिश्रा, श्री राजकुमार सिंह और डॉ0 शिवकुमार सिंह उपस्थित रहे।

Teacher's Corner

Tracing the Footprints of Women in Literature, Cinema and Popular Culture

The presence of women in literature has been surreptitious, and largely covert for the longest period of time before they were able to emerge from the phallocentric shadows as assertive identities within themselves. The tide of narratives within popular culture, literature, theatre and even cinema has systematically muffled the voices of women thus depriving us of the many unseen Emily Bronte, Jane Austen, Kamala Das, Toru Dutt and Sylvia Plath. The liberated modern women are largely viewed as Frankenstein of the capitalist machinery. The clandestine forces of patriarchy which are at work have always conjured up structures to keep the feminine voices at the periphery of the central narrative. All kinds of feminine sensibilities are conveniently sabotaged and misconstrued by the powers of the patriarchy. For instance, the women in cinema are divided into straightjacketed categorization instead of being appreciated for their versatility. There are only two kinds of women in cinema: the damsel in distress or the vamp. Coventry Patmore's angel in the house is always the demure, pure and innocent woman scrambling for a piece of narrative within the male centered world. Feminine rage is rarely if never portrayed on the screen, the storms within the women characters are subdued quietly and rather unceremoniously. The new form of the old cinematic traditions can be found in mean girl, pick me girl, or not like other girls trends in contemporary popular culture. However, it is heartening to see women creators creating ripples in the waters of time with their works in cinema with works such as Barbie, and Lady Bird which genuinely capture the essence of being a woman without being too celebratory about it. Literary crusaders of feminist voices have only been able to keep up with their vigor through the likes of Virginia Woolf, Sylvia Plath, Aphra Behn, Toru Dutt, Sujata Bhatt, Meena Alexander, the Bronte sisters and the shining star of Indian poetry Kamala Das. The women authors aptly developed a new kind of language through which they invaded the patriarchal space and gave way to parallel dimensions within literature. The future does hold within itself an ocean of immense creative possibility bolstered by the liberation of women authors and creators.

Ms. Sushmita Pandey
Assistant Professor (English), (Self Finance)
Kalicharan P.G. College
psushmita306gmail.com

Shastri : A Political Icon

Lal Bahadur Shastri, the unassuming yet resolute leader, etched his name in the annals of Indian History as the country's second Prime Minister. Born on October, 2, 1904, in Uttar Pradesh, Shastri rose from humble beginnings, embodying the values of simplicity and integrity throughout his life.

Shastri's political journey gained momentum during the struggle for independence, where his dedication skills came to the forefront when he assumed office in 1964, facing the daunting task of navigating a nation still recovering from the loss of its first Prime Minister, Jawaharlal Nehru.

One of Shastri's defining moments was during the Indo-Pak war of 1965. In the face of adversity, he demonstrated steely resolve, earning respect for his commitment to national security. The slogan "Jai Jawan Jai Kisan" (Hail the Soldier, Hail the Farmer), coined by him, succinctly captured the essence of a nation relying on both its defenders and food producers.

Tragically, Shastri's tenure was cut short with his untimely death in Tashkent in 1966, soon after signing the Tashkent Agreement with Ayub Khan, bringing an end to the war. Lal Bahadur Shastri's legacy endures as a symbol of leadership, simplicity and unwavering commitment to India's progress.

Mr. Prabhash Dixit
Assistant Professor (Medieval & Modern History), (Self Finance)
Kalicharan P.G. College
prabhashdixit95@gmail.com

……..

Kalicharan in Newspaper